चतुर बुद्धि

अंजु चौधरी
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

एक समय की बात है सोना पहाड़ी की तलहटी में सुन्दरवन नामक एक बहुत घना और हरा भरा जंगल था। उसमें हिरणों का एक झुण्ड रहता था। झुण्ड का सरदार चतुर बुद्धि नाम का एक सुनहरा हिरन था। वह बहुत बुद्धिमान एवं समझदार था। उसके साथ रहने वाले सभी हिरन सुखी व स्वस्थ थे। वह अपनी बुद्धिमानी से आने वाली सभी समस्याओं का हल निकाल लेता था। जंगल में रहने वाले सभी पशु–पक्षी उसके पास आकर अपनी समस्याओ पर अक्सर चर्चा करते तो वह अपने उत्तम सुझावों से उनकी समस्या का निवारण तुरंत कर देता था। यहां तक कि जंगल का राजा शेरा भी उसकी बात मानता था। वह जंगल बहुत हरा भरा था चारों ओर सुन्दर फलों से लदे वृक्ष थे। जंगल के बीचों–बीच सदा नीरा नदी बहती थी। जो सभी जानवरों की प्यास बुझाने के साथ–साथ सुन्दर वन को भी हरा–भरा रखती थी। उस जंगल में छोटे–छोटे तालाब और पोखर थे जहां वर्ष भर जल भरा रहता था। धीरे–धीरे समय बदला, जंगल वासियों ने नदी की उपेक्षा करना शुरू कर दिया, वो उसमें गंदगी डालते एवं जंगल का सारा कचरा बहकर नदी में जमा हो जाता। धीरे–धीरे नदी सूखने लगी जिसके कारण उससे जुड़े तालाब और पोखर भी सूखने लगे, उनके सूखने के कारण जंगल की हरियाली भी कम हेाने लगी। जंगल के वातावरण में आए इस बदलाव को सब महसूस करते थे परन्तु इस समस्या से उबरने के लिए कोई भी प्रयास नहीं करता था, और एक दिन जब ज्येष्ठ माह की दोपहर में सूर्य के प्रचंड ताप से धरती आग का गोला सी जलने लगी तो जंगल में भीषण आग लग गई। वृक्ष जल–जल कर राख होने लगे। पशु– पक्षी घबरा कर जान बचाने के लिए इधर–उधर भागने लगे। इस आपाधापी में कई जानवर मारे गए और कई जान बचाकर दूसरे जंगलों में पलायन कर गए। चतुर बुद्धि ने भी जान बचाकर अपने परिवार के साथ पास के जंगल में शरण ली। समय बीतने लगा, कई वर्ष बीत गए अब चतुर बुद्धि के बच्चे भी जवान हो गए। चतुर बुद्धि एवं उसकेपरिवार को अपने घर, अपने जंगल सुंदरवन की बहुत याद आती परन्तु वह चुपचाप हो जाता किसी से भी वह अपना दुःख साझा नहीं करता। एक दिन ज्येष्ठ माह की तपती दोपहर में चतुर बुद्धि अपनी पत्नी नैनी से बोला–नैनी हमें अपना घर छोड़े कितने बरस बीत गए, हमें अपने वन की भी सुध लेनी चाहिए। हमारे वन को भी हमारी याद आती होगी। हमें चल कर देखना चाहिए कि हमारे बिना वो कितना उदास है। नैनी ने कहा तुम ठीक कहते हो हमने कितने वर्ष उस वन की गोद में हंसी खुशी बिताए हैं अब उस वन का हाल–चाल जानना हमारा कर्तव्य है। नैनी और चतुर बुद्धि ने जब ये बात शाम को अपने परिवार के सभी सदस्यों को बताई तो सभी ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया। छोटे शावक मनु और तनु यह खबर सुन कर खुशी से उछलने लगे कि वो अपने दादाजी के किस्सों वाले सुन्दरवन को देख सकेंगे।

अगले दिन प्रातः जब सूरज ने आंखे खोली तो चतुर बुद्धि अपने पूरे परिवार को लेकर सुन्दरवन की ओर चल दिया। चार दिन के लम्बे सफर के बाद जब पूरा झुण्ड सुंदरवन पहुंचा तो वहां का दृश्य देख कर चतुरबुद्धि और नैनी की आंख में आंसू आ गए। वहां जाकर उन्होंने देखा कि चारों तरफ सूखा ही सूखा फैला था। हरा चारा न मिल पाने के कारण वहां के जानवर कमजोर हो कर बूढ़े दिखाई देने लगे थे। जो जानवर अब जवान हो गए थे वे दूसरे जंगलों की ओर पलायन कर गए थे। चतुर बुद्धि अपने को कुछ संभाल पाता इससे पहले ही सामने से उसे हाथियों का एक विशाल झुण्ड से आता दिखाई दिया। जिसका सरदार उसका दोस्त गज्जू था। चतुर बुद्धि उसे देख कर उससे लिपट कर रो पड़ा। गज्जू भी चतुर बुद्धि से मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ। एक दूसरे की कुशलक्षेम पूछने के बाद चतुर बुद्धि ने उससे पूछा कि मित्र इस भीषण गर्मी में तुम कहां जा रहे हो। गज्जू ने कहा क्या बताऊं मित्र इस जगल में अब मेरे एवं मेरे परिवार का पेट भरने के लिए पेड़ बचे ही नहीं और जो सदा नीरा नदियां मेरे परिवार की प्यास बुझाती थी और गर्मियों में जिस के किनारे मेरे बच्चे स्नान कर अपनी तपती देह को शीतलता देते थे, वह भी अब सूख गई है।

इसलिए भोजन एवं जल की तलाश में मैं और मेरे परिवार ने इस वन को छोड़ने का निश्चय कर लिया है। चतुर बुद्धि कुछ बोलता इससे पहले ही चूं–चूं गौरेया जो पेड़ पर बैठी उन दोनों की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी बोलीं–यदि सभी इस सुन्दरवन को छोड़ कर चले जाओगे तो ये वन सदा ही उजड़ा रहेगा। हमें इसे छोड़ कर अन्यत्र जाने की जगह इसको हरा–भरा रखने के उपाय खोजने होंगे और अगर हम इसे छोड़ कर दूसरे वन में गए और वहां भी ऐसा ही हुआ तो फिर हम कहां जाएंगे अतः हमें इसे छोड़ने की जगह इसे ही नया जीवन देना है। गज्जू और चतुर बुद्धि को चूं चूं गौरेया के विचार पसंद आए। गज्जू ने चतुर बुद्धि से पूछा कि क्या ऐसा हो सकता है कि हमारा ये सुन्दर वन फिर से हरा भरा हो जाए। चतुर बुद्धि बोला क्यों नहीं हो सकता, समस्या कोई भी हो और कितनी भी बड़ी हो सबका समाधान संभव है। हमें जरा शान्ति से बैठ कर इसका हल खोजना होगा।

चतुर बुद्धि और गज्जू दोनों ही अपने–अपने परिवार के साथ जंगल के पुराने बरगद के पेड़ की छाँव में बैठ गए। उन दोनों को आया देख कर बरगद का पेड़ भी खुशी से झूमने लगा। उसके पत्ते हिलने लगे जिससे निकल कर शीतल वायु बहने लगी। जिसमें विश्राम कर चतुरबुद्धि एवं गज्जू का परिवार भी तरो ताजा हो गया। चतुरबुद्धि ने गज्जू से कहा कि हमें सबसे पहले तो इस वन की सफाई करनी होगी। बड़े–बड़े जले हुए लकड़ी के लट्ठों को एक जगह इकट्ठा करना होगा। जो बाद में हमारे घर बनाने के काम आएंगे। गज्जू ने कहा इस काम में हमें सबकी मदद की जरूरत पड़ेगी मैं ऐसा करता हूं कि आवाज देकर सबको बुला लेता हूं। गज्जू ने आवाज देकर सबको बुला लिया। सभी के आने के बाद चतुर बुद्धि ने कहा कि अभी वर्षा आने में दो माह का समय है इससे पहले हमें वर्षा जल को एकत्र करने एवं जंगल की सफाई के कार्य करने होंगे। मनु बोला पर दादाजी सफाई क्यों करनी है, वर्षा आएगी तो वह जंगल के कचरे को बहा ले जाएगी। चतुर बुद्धि बोला ये तो ठीक है परन्तु वो कचरा हमारी नदियों में जमा होकर उसके जल धारण करने की क्षमता को कम कर देगा और अगले वर्ष जब फिर से वर्षा आएगी तो पानी नदियों के किनारे से बह कर जंगल में बाढ़ का रूप ले लेगा जिससे छोटे पशु इसमें डूब कर अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। अब मनु को समझ आया कि वर्षा से पहले नालियों कि सफाई क्यों जरूरी होती है। चतुर बुद्धि ने सब जानवरों के प्रयास से वर्षा से पहले जंगल में कई तालबों एवं पोखरों की सफाई करवाई, सोना पहाड़ी की ढलान पर मिट्टी की मेढ़ें बनवाई जिससे जल ढलान से तेजी से ना बह कर धीरे–धीरे रूक–रूक कर बहे। सदा नीरा नदी की सफाई करा कर उस पर पत्थर एवं मिट्टी से जगह–जगह बांध बनाए। उसके किनारे–किनारे गहरे गढ्ढे खुदवा कर उसमें रेत एवं छोटे पत्थरों की परत से भरवा दिया। तनु ने पूछा दादाजी इन गड्ढों से क्या फायदा? चतुर बुद्धि बोला तनु बेटा ये है जिससे जब नदी का जल गर्मियों में कम होता है तो भूमिगत जलाशय से जल बहकर नदी में जाता है और इसके अतिरिक्त ये भूमिगत जल स्तर को भी बढ़ाता है जिससे मिट्टी में नमी बनी रहती है और पेड़ की जड़ें इस नमी से जल लेकर पेड़ को कभी भी सूखने नहीं देती। यही भूमिगत जल जंगल की वनस्पतियों को हरा–भरा रखता है। यदि हमारे जंगल में जल की उचित मात्रा रहेगी तो उसे अब दोबारा आग जैसी आपदा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

पूरे सुन्दरवन के सभी वासियों ने मिल कर ढेर सारे कुएं भी बनाए एवं सोना पहाड़ी पर कई कंटूर ट्रेंच बनाई। दो माह बाद जब वर्षा आई तो उनके तालाब एवं पोखर व अन्य जलीय इकाइयां सभी भर गए। परकोलेशन टेंक से भूमिगत जल तो बढ़ा ही साथ ही साथ नदी की सूखी काया में फिर से नई जान आ गई, वह फिर से कल–कल कर सुन्दरवन में बहने लगी। सबने मिल कर चतुर बुद्धि की भूरी–भूरी प्रशंसा की। चतुर बुद्धि ने सबसे कहा कि अभी हमारा कार्य समाप्त नहीं हुआ है हमें अपने इस पर्यावरण को बचाने के लिए जंगल में फिर से वृक्ष लगाने होंगे और नदी के किनारों को भी वृक्षों से सजाना होगा जिससे नदी के किनारे की मिट्टी के कटाव को रोका जा सके। सबने मिल कर शपथ उठाई कि आज से हमसब अपने प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा अपने प्राणों की ही तरह करेंगे। इस प्रकार सुन्दरवन को फिर से नया जीवन मिला और उसमें रहने वाले जीव–जन्तु फिर से खुशहाल हो गए। सभी को यह बात समझ आ गई कि "जल है तो कल है"।